मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 4, अंक 71, अक्टूबर(द्वितीय), 2019

समुद्र मंथन

डॉ० सच्चिदानन्द झा

मानव अपनी बाह्य दुनिया के तकनीक और रसायन को समझने में रुचि तो रखता है, ,,किन्तु अपने भीतर के आध्यात्मिक तकनीक और रसायन को समझने की चेष्टा भी नही करता। वैदिक काल में ऋषि-मुनियों ने मन के महत्व को परख कर नयी-नयी खोजें की और महाप्रकृति का सूक्ष्म और गहन अध्ययन कर उन खोजों को श्रद्धेय भाषा में अभिव्यक्त कर दिया। ये सभी खोजें विज्ञान प्रोक्त भाषा में अभिव्यक्त नहीं रहने से विद्वान जनों को ऊटपटांग लगता है। किन्तु सभी अटपटे लगने वाले तथ्य अन्ततः कई वैज्ञानिक खोजों की ओर संकेत करते हैं।

आर्ष ग्रथों के अनुसार मन्दार पर्वत का मथानी और वासुकी की रस्सी से सागर स्थित कच्छप का आधार बनाकर देव-दानव द्वारा समुद्र मंथन किया गया। इस सागर मंथन से चौदह प्रकार के रत्नों की प्राप्ति हुई।

जरमनी के अल्फ्रेड वेगनर ने १९१२ ई० में महाद्वीपीय प्रवाह सिद्धांत प्रतिपादित कर समुद्र मंथन आख्यान को अनजाने में वैज्ञानिक आधार प्रदान कर दिया है। इन्होंने पृथ्वी के थल भाग यथा अमेरिका, ,यूरेशिया,, अफ्रीका आदि का एक सम्मिलित चित्र गोल आकार में बनाते हुए कहा कि कार्बोनिफेरस काल में सभी महाद्वीप एक जगह एकत्रित थे। उस एकत्रित पिण्ड को वेगनर ने "पेंजिया" कहा और पेंजिया के चारों ओर के विशाल जलराशि को "पेंथालासा"। अन्तिम कार्बोनिफेरस काल में इस पेंजिया में दरारें हुई और इसके टुकड़े प्रवाहित होकर वर्तमान स्वरूप में विस्थापित हो गये। आर्ष ग्रंथ में भी कहा गया है - "सप्तद्वीपवतीं पृथ्वीं"। पेंजिया अर्थात् पद्मनाभ और पेंथालासा अर्थात् एकार्णव श्रद्धेय भाषा को समझने से स्थिति स्पष्ट हो जाती है।

वैलेनटाइन और मूर्स ने १९७३ ई० में वेगनर के सिद्धांत को संशोधित करते हुए कहा कि प्री केम्ब्रियन कल्प में भी निर्मित प्रथम पेंजिया आज से ६० करोड़ वर्ष पूर्व विखण्डित हो गया था। वह विखण्डित पेंजिया आज से २० करोड़ वर्ष पूर्व कार्बोनिफेरस काल में पुनः एक जगह एकत्रित हो गया था। आर्ष ग्रंथ में भी इस एकत्रित थलों की पुष्टि की गई है - "पृथ्वी सप्तद्वीप समन्वितः"।

प्री केम्ब्रियन कल्प में पृथ्वी ज्वलित अवस्था में थी। आर्ष ग्रंथ में भी इसकी पुष्टि की गई है -

"हुताशनज्वलितशिखोज्ज्वलप्रभं।
सुगन्धिनं शरदमलार्कतेजसम्॥
विराजते कमलमुदारवर्चसं।
महात्मनस्तनुरुह चारुदरशनम्॥"

अर्थात् परमात्मा के अंग से प्रकट यह सुगंधित कमल अग्नि के समान प्रज्वलित किन्तु शरद काल के सूर्य की भाँति चमक रहा था।

आर्ष ग्रंथ यथा अग्नि पुराण, पद्म पुराण, विष्णु पुराण, ऋक् संहिता, अथर्व संहिता, ऋग्वेद आदि में स्पष्ट कर दिया गया है कि पद्म ही पृथ्वी है-

"तच्च पद्म पुरा भूतं पृथिवी रूप मुत्तमम्"।

वेगनर को यह जानकारी मिली कि विषुवत रेखीय जलवायु या आर्कटिक जलवायु या कोई अन्य जलवायु के प्राचीन प्रमाण ऐसे अक्षाशों पर स्थित है,, ,जहाँ आज वह जलवायु नहीं है। इसका कारण जानने के क्रम में सभी खण्डित महाद्वीपों का चित्र वनाते हुए उन सबको एक जगह एकत्रित कर उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि महाद्वीपीय प्रवाह के कारण सभी खण्डित द्वीपें यत्र-तत्र विस्थापित हुए हैं। महाद्वीपीय प्रवाह के कारण जलवायु परिवर्तन पृथ्वी पर हुआ है। विश्व में सभी द्वीपों का यत्र-तत्र विस्थापन दो प्रकार के बलों के कारण हुआ है। यद्यपि वेगनर ने पहला गुरुत्व और दूसरा प्ल्वनशीलता बलों को कारण बताया था, तथापि मैसन महोदय ने समुद्री पर्वत कटक अर्थात् प्राचीन मेरु पर्वत के दोनों ओर घनात्मक और ऋणात्मक चुम्बकीय विसंगतियां ये दो बल महाद्वीपीय प्रवाह का कारक होना बताया है, अधिक वैज्ञानिक लगता है।

प्रिन्सटन विश्वविद्यालय के भूतपूर्व प्रोफेसर हैरी हेस ने १९६० ई० में सनसनी फैलाते हुए कहा कि पृथ्वी के २० टैकटॉनिक प्लेटों के समूह पर स्थित महासागर और महाद्वीप की तली विस्थापित हो जाती है। एफ जे व्हाइन एवं डी एच मैथ्यू की चुम्बकीय विसंगति संकल्पना से हैरी हेस के सिद्धांत की पुष्टि हो जाती है। मैसन महोदय ने ही १९५२ ई० में चट्टानों के चुम्बकत्व का पता लगाया था। होम्स महोदय के संवहन तरंग सिद्धांत के आधार पर हैरी हेस ने कहा कि मैण्टिल से उठने वाली संवहन तरंग के ऊपर कटक स्थित है। कटक के दोनों ओर घनात्मक और ऋणात्मक चुम्बकीय विसंगतियों के कारण महासागर और महाद्वीप की तली विस्थापित हो जाती है। कॉक्स, डोयल,, डलरिम्पन आदि के अनुसार पृथ्वी के मुख्य चुम्बकत्व क्षेत्र में संवहन तरंग से क्षेत्र का उत्क्रमण हो जाता है।

सम्पूर्ण टेकटॉनिक प्लेट आदि काल में मेरु कहलाती थी। आर्ष ग्रथों में इसका प्रमाण है-'मेरु सप्त द्वीप समन्वितः'। टेकटॉनिक प्लेट पर ही सम्पूर्ण स्थलमण्डल है और महासागर भी। इस टेकटॉनिक प्लेट के नीचे अर्धविगलित अवस्था में मैण्टिल है। मैण्टिल से उठने वाली संवहन तरंग के कारण ज्वालामुखी उदगार के समय पृथ्वी के आन्तरिक भाग से मैग्मा टेकटॉनिक प्लेट के ऊपर स्थलमण्डल पर आ जाती है। ज्वालामुखी उदगार से उत्सर्जित अवसादी बसाल्ट निर्मित चट्टानें कटक के दोनों ओर दो हिस्सों में बंटकर सागर में आगे बढ़ कर तली को खिसकातीं हैं। आज भी आंध्रमहासागर की तली खिसकती जा रही है, जबकि प्रशांत महासागर की तली सिकुड़ती जा रही है।

इसी प्रवाह के कारण जम्बू, प्लाक्ष,,,,,,,, शाल्मलि, कुश, क्रौंच, शाक और पुष्कर महाद्वीपों का अस्तित्व सामने आया। इसी क्रम में "पेंथालासा" अर्थात् एकार्णव से क्षरोद, इक्षुरसोद, सुरोद, धृत, स्वादु आदि सात सागरों की उत्पत्ति हुई। पद्मनाभ (पृथ्वी) के कठोर होते ही थल अर्थात् "पेंजिया" में प्री-केम्ब्रियन युग में हुए दरारों से मैण्टिल से उठने वाली संवहन तरंग (वासुकी) और प्राचीन मंदार पर्वत के दोनों ओर घनात्मक और ऋणात्मक चुम्बकीय

विसंगतियां ये दो शक्तियाँ देव और दानव को चरितार्थ करती है। प्रश्न है कि मंदार पर्वत दरार में कैसे आ गया? इसका उत्तर है-

ततस्ते मन्दारगिरि मोजसोत्पाट्यदुर्मदाः।
नदन्त उदधिं निन्युः सक्ताः परिघबाहवः॥

अर्थात् मंदराचल को उखाड़ कर दानव गरजते हुए सागर तट की ओर ले चले।

ऋणात्मक चुम्बकीय विसंगतियों के कारण अर्थात् दानवों ने गहराई में स्थित मंदार पर्वत को उस विशाल लम्बी दरार में लाया जो कालान्तर में आर्ष ग्रथों के अनुसार क्षीर सागर कहलाया। वेगनर महोदय ने महादेशीय प्रवाह सिद्धांत प्रतिपादित करते कहा कि पेंजिया से टूटकर अंगारा लैंड बना और शेष गोन्डाना से यूरेशिया तथा अन्य से टूटकर टिथीज सागर के दक्षिण की ओर भारत,,,, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया और अण्टार्कटिक बना। मंदार पर्वत क्षीर सागर के किनारे स्थित रहा होगा,, ऋणात्मक चुम्बकीय विसंगतियों के कारण अति गर्जना के साथ मंदार पर्वत दरार में खिसक आया होगा,, जहाँ पूर्व से ही बसाल्ट निर्मित कठोर चट्टान कच्छप सदृश्य आधार बनकर स्थित था। मैण्टिल से उठने वाली संवहन तरंग के कारण ज्वालामुखी उदगार के समय पृथ्वी के आन्तरिक भाग से मैग्मा टेकटॉनिक प्लेटों को धकेलता रहा और तथाकथित टिथीज सागर अर्थात् क्षीर सागर अस्तित्व में आया।

यह प्रश्न भी अनुत्तरित नहीं है कि सागर मंथन से चौदह प्रकार के रत्नों की प्राप्ति कैसे हुई? मंदार पर्वत के दोनों ओर घनात्मक और ऋणात्मक चुम्बकीय विसंगतियों के कारण महासागर और महाद्वीप की तली जैसे-जैसे विस्थापित होती रही,, वैसे-वैसे वैसे-वैसे पृथ्वी पर बड़े स्तर पर जलवायु परिवर्तन होते रहे और चौदह प्रकार के रत्नों की प्राप्ति होती रही यथा अश्व,, हाथी, शंख, वृक्ष इत्यादि।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें